MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY, BHOPAL

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

Accredited with "A" Grade by NAAC

DIPLOMA IN BHAGAVADEETA (SESSION JUNE-JULY-2026)

PAPER- श्रीमद्भगवद्गीता – प्रथम

ASSIGNMENT QUESTION PAPER- FIRST **MAXIMUM MARKS: 30**

निर्देश:-

01. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
02. विश्वविद्यालय द्वारा प्रदाय सत्रीय उत्तरपुस्तिकाओं में ही सत्रीय प्रश्नपत्र हल करना अनिवार्य है।
03. सत्रीय कार्यउत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ को सावधानीपूर्वक पूरा भरें और उसमें उसी विषय का प्रश्नपत्र हल करें जो उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर अंकित किया है।
04. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका अपने अध्ययन केन्द्र पर जमा कर उसकी पावती अवश्य प्राप्त करें।

नोट : सभी प्रश्न करना अनिवार्य है।

प्रश्न (1). युद्ध की घोषणा होने पर अर्जुन के हृदय में भय और संकोच क्यों था?

प्रश्न (2). आप गीता के संदर्भ में "सांख्य योग" का विश्लेषण कैसे करते हैं?

प्रश्न (3). भगवान कृष्ण ने अर्जुन को "ज्ञान कर्म संन्यास योग" कैसे समझाया..?

प्रश्न (4). आत्म संयम योग...आत्मसंयम और ध्यान का योग हमारे दैनिक जीवन में इसका क्या महत्व है?

प्रश्न (5). "ज्ञान और विज्ञान योग" को विस्तार से बताएं?

प्रश्न (6). "राज विद्या राज गुह्य योग..." इससे आपका क्या तात्पर्य है?

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY, BHOPAL

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

Accredited with "A" Grade by NAAC

DIPLOMA IN BHAGAVADEETA (SESSION JUNE-JULY-2026)

PAPER- श्रीमद्भगवद्गीता – प्रथम

ASSIGNMENT QUESTION PAPER- SECOND **MAXIMUM MARKS: 30**

निर्देश:-

01. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
02. विश्वविद्यालय द्वारा प्रदाय सत्रीय उत्तरपुस्तिकाओं में ही सत्रीय प्रश्नपत्र हल करना अनिवार्य है।
03. सत्रीय कार्यउत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ को सावधानीपूर्वक पूरा भरें और उसमें उसी विषय का प्रश्नपत्र हल करें जो उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर अंकित किया है।
04. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका अपने अध्ययन केन्द्र पर जमा कर उसकी पावती अवश्य प्राप्त करें।

नोट : सभी प्रश्न करना अनिवार्य है।

प्रश्न (1). दैवीय बुद्धि और आध्यात्मिक समृद्धि को कैसे पहचानें विभूति योग की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न (2). जब अर्जुन श्री कृष्ण के विश्वरूप दर्शन की प्रार्थना करता है तो क्या होता है विश्वरूप दर्शन योग की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न (3). कृपया क्षेत्र क्षेत्रीज्ञ विभाग योग भौतिक शरीर और शाश्वत आत्मा को समझाएं ।

प्रश्न (4). आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए आपको "उल्टे वृक्ष" की अवधारणा को समझना होगा... इसका "पुरुषोत्तम योग" से क्या संबंध है?

प्रश्न (5). दिव्य और राक्षसी मनुष्यों के संदर्भ में "देवसुर संपद विभाग योग" से आपका क्या तात्पर्य है?

प्रश्न (6). गीता का अंतिम अध्याय "मोक्ष संन्यास योग" का वर्णन करता है... कर्म, ज्ञान और भक्ति के माध्यम से जीवन का समापन... इस समापन का क्या अर्थ है?

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY, BHOPAL
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल
Accredited with "A" Grade by NAAC

DIPLOMA IN BHAGAVADEETA (SESSION JUNE-JULY-2026)

PAPER- श्रीमद्भगवद्गीता – द्वितीय

ASSIGNMENT QUESTION PAPER- FIRST **MAXIMUM MARKS: 30**

निर्देश:-

01. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
02. विश्वविद्यालय द्वारा प्रदाय सत्रीय उत्तरपुस्तिकाओं में ही सत्रीय प्रश्नपत्र हल करना अनिवार्य है।
03. सत्रीय कार्यउत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ को सावधानीपूर्वक पूरा भरें और उसमें उसी विषय का प्रश्नपत्र हल करें जो उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर अंकित किया है।
04. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका अपने अध्ययन केन्द्र पर जमा कर उसकी पावती अवश्य प्राप्त करें।

नोट : सभी प्रश्न करना अनिवार्य है।

प्रश्न (1). युद्ध की घोषणा करने के लिए किन.किन दिव्य उपकरणों का प्रयोग किया गया थाऔर कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध की आधिकारिक घोषणा करने के लिए उनका प्रयोग किसने किया था।

प्रश्न (2). अपने प्रिय चचेरे भाइयों और गुरुओं को अपने विरुद्ध खड़ा देखकर अर्जुन दुविधा और दुःख में डूब गया। विषद योग में अर्जुन की मनस्थिति का वर्णन आप कैसे करेंगेः

प्रश्न (3). गीता का पाँचवाँ अध्याय कौन सा है। इसका कर्म योग से क्या संबंध है।

प्रश्न (4). "संन्यास" का अर्थ दैनिक कर्तव्यों का त्याग करना नहीं है..आप "ज्ञान कर्म संन्यास योग" को कैसे समझाते हैं?

प्रश्न (5). अक्षर ब्रह्म योग शाश्वत ब्रह्म और आत्मा की मुक्ति का अन्वेषण करता है। इस गीता के अध्याय में श्री कृष्ण अर्जुन के आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर कैसे देते हैं?

प्रश्न (6). सर्वव्यापी ईश्वर के प्रति भक्ति की शक्ति का वर्णन गीता के "राज विद्या राज गुह्य योग" में किया गया है। इससे आप क्या समझते हैं?

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY, BHOPAL

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

Accredited with "A" Grade by NAAC

DIPLOMA IN BHAGAVADEETA (SESSION JUNE-JULY-2026)

PAPER- श्रीमद्भगवद्गीता – द्वितीय

ASSIGNMENT QUESTION PAPER- SECOND **MAXIMUM MARKS: 30**

निर्देश:-

01. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
02. विश्वविद्यालय द्वारा प्रदाय सत्रीय उत्तरपुस्तिकाओं में ही सत्रीय प्रश्नपत्र हल करना अनिवार्य है।
03. सत्रीय कार्यउत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ को सावधानीपूर्वक पूरा भरें और उसमें उसी विषय का प्रश्नपत्र हल करें जो उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर अंकित किया है।
04. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका अपने अध्ययन केन्द्र पर जमा कर उसकी पावती अवश्य प्राप्त करें।

नोट : सभी प्रश्न करना अनिवार्य है।

प्रश्न (1). जब श्री कृष्ण ने अपना दिव्य स्वरूप प्रकट किया तो अर्जुन आश्चर्यचकित रह गए। श्री कृष्ण के दिव्य रूप में अर्जुन ने जो देखा उसका विस्तृत वर्णन करें। विश्वरूप दर्शन योग।

प्रश्न (2). श्री कृष्ण ने ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण में निहित भक्ति की शक्ति को समझाया है श्री कृष्ण के अनुसार भक्ति योग का सार क्या है।

प्रश्न (3). प्रेक्षक आत्मा और प्रेक्षित ;भावनाओं की समझ मोक्ष की ओर ले जाती है। गीता के इस अध्याय क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग योग से आप क्या समझते हैं।

प्रश्न (4). व्यक्ति का सच्चा स्वरूप तीन गुणोंसत्व रजस और तमस से परे है। गीता में गुणत्रय विभाग योग से आपका क्या तात्पर्य है।

प्रश्न (5). मनुष्य स्थायी रूप से दिव्य या राक्षसी नहीं होते। इसका वर्णन दैवासुर संपदा विभाग योग में किया गया है।क्या आप इसका अर्थ समझा सकते हैं?

प्रश्न (6). आध्यात्मिक प्रगति आस्था की गुणवत्ता पर निर्भर करती है... गीता में "श्रद्धा त्रय विभाग योग" अध्याय के अंतर्गत इसका वर्णन किया गया है । व्याख्या कीजिए?